राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 106
बांबी
एक रोमांचक विशेषांक
नागराज
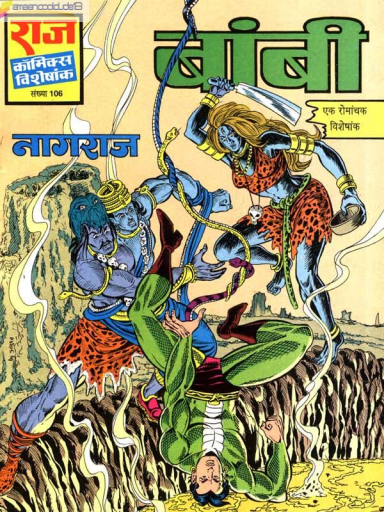
pृथ्वी- एक आश्चर्यजनक ग्रह है। ऐसा ग्रह जिसका केन्द्र तो खौलते और दहकते लावे से भरा हुआ है, लेकिन जिसकी सतह के उत्तरी और दक्षिणी सिरे बर्फ की कई मीटर मोटी पर्त से ढके हुए हैं। और इस खौलते लावे और बर्फीली पर्त के बीच की हजारों किलोमीटर गहरी गहराईयों में न जाने कितनी बहुमूल्य वस्तुएं दबी हैं। न जाने कितने बहुमूल्य खनिजों की खानें हैं, और न जाने कितने आश्चर्य छिपे हैं—

मानव ने इन खनिज सम्पदाओं को पृथ्वी के अन्दर से निकालकर, अपने आराम की वस्तुएं बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है—

नतीजे में, पृथ्वी का अन्तर धीरे-धीरे खोखला होता जा रहा है। और पृथ्वी को बांधने वाली चट्टानों के बीच में दरारें पैदा होती जा रही हैं—

लेकिन मानव ने पृथ्वी के सीने में खानें बनाकर उसके सीने को छलनी करने का सिलसिला बदस्तूर जारी रखा है। समुद्र भी मानव के इस हमले से नहीं बच पाया है। क्योंकि समुद्र के नीचे है मानव के लिए सबसे बहुमूल्य खनिज- पेट्रोलियम—

और इसको पाने के लिए आदमी कुछ भी कर सकता है—

यह 'ऑयल रिंग' यानी तेल का कुआं, एक नई तकनीक द्वारा बनाया गया है। यहां पर हम समुद्र की सतह से भी कई किलो-मीटर नीचे स्थित, खनिज तेल के भंडारों तक पहुंच सकते हैं, राज! ...
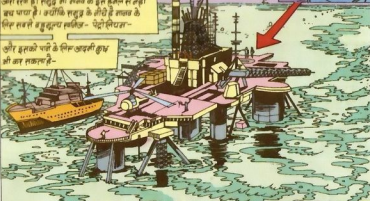
बांबी

कथा एवं चित्र- अनुपम सिन्हा
इंकिंग - विट्ठल कांबले
सुलेख व रंग - सुनील पाण्डेय
सम्पादक - मनीष गुप्ता

तुम 'भारती चैनेल' के जनसंपर्क अधिकारी हो। और तुमने अब हमारे 'ऑयल रिंग' को भी देख लिया है। अब बताओ, इस पर फिल्म बनाना कब से शुरू कर रहे हो?

कल से ही काम शुरू करवा देता हूं डॉक्टर मित्रा! वैसे भी इस पर फिल्म बनाना हमारे लिए भी गर्व की बात होगी।

अब मुझे इजाजत दीजिए! कल समय मिला तो फिर आऊंगा!

लेकिन राज के रूप के पीछे नागराज, यह नहीं जानता था कि उसकी 'ऑयल रिंग' पर दुबारा आने की जरूरत नहीं थी-

क्योंकि उसी वक्त, समुद्र तल पर कसे 'ऑयल रिंग' के लोहे के गर्डरों में कंपन हो रहा था-

कुछ ही पलों में यह कंपन सतह तक पहुंच गया था-

और इस कंपन का कारण चाहे और कुछ भी हो, मगर कम से कम वह कारण प्राकृतिक नहीं था-

★ नागराज अपने वस्त्रों को सूक्ष्म रूप में करके बेल्ट में रख लेता है।

और कुछ ही पलों बाद-
यहां पर तो पानी काफी धुंधला और बहुत प्रदूषित लग रहा है। शायद तेल का पाइप बीच से टूट जाने के कारण तेल, पानी में मिश्रित हो रहा है...
... शायद यही पानी के धुंधला होने का कारण है। परन्तु तेल-रिसाव का कारण क्या हो सकता है?
कहीं इस क्षेत्र में कोई भूकम्प तो नहीं आ रहा है, जिससे पाइपों में दरारें पड़ गई हैं!
खैर! कारण जो भी हो, उसका पता लगाने तो मुझे दुबारा यहां आना पड़ेगा।...
... क्योंकि फिलहाल मेरे फेफड़ों की ऑक्सीजन खत्म हो रही है!
लेकिन कोई और नागराज को सतह तक जाने देने के मूड में नहीं था-
... इतने धुंधले पानी में कुछ साफ नजर नहीं आ रहा है। पर यह जिसकी भी पकड़ है, बहुत मजबूत है। मैं सतह तक जाना तो दूर, हिल तक नहीं पा रहा हूं।
य... यह क्या है?...
... किसी विशालकाय ऑक्टोपस की एक सूंड लगती है।...
और मेरा दम घुटता ही जा रहा है।...
... मैं अपने विषदंश का प्रयोग भी नहीं कर सकता, क्योंकि मेरे दांत भी इसके शरीर तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।

☆ ★ नागों के सूक्ष्म रूप में आने पर उनके मुंह में भरी वायु भी संगठित यानी 'कंप्रेस्ड' हो जाती है।

और पहले से ही, गर्डर पर पड़ चुकी दरारें और चौड़ी हो गईं—
कुछ पल गर्डर लहरों में लहराया, और फिर टुकड़े-टुकड़े हो गया—
ओफ़। अद्भुत शक्ति है इस प्राणी में। पर यह प्राणी है क्या? कुछ साफ नहीं दिख रहा।...
...पर ये कोई भी हो, इसको जिन्दा छोड़ना और तबाही को न्यौता देने के बराबर होगा।
नागराज ने लपककर अपने दांत उस 'सूंड' में गड़ा दिए—
और वह 'प्राणी' जो कोई भी था, तड़प उठा—
अब यह बचेगा नहीं! गलकर मृत हो जाएगा! अब मुझे सतह पर चलना चाहिए! न जाने इस टूटे गर्डर की वजह से ऊपर क्या मुसीबत खड़ी हो गई हो!
सतह पर मुसीबतें खड़ी होने का दौर अभी शुरू ही हुआ था—
नागराज! तुम यहां पर कैसे? और... और वह राज कहां गया?
कौन राज? मुझे तो कोई नजर नहीं आया। फिलहाल आप लोग इस 'ऑयल रिंग' को खाली कर दें।
नीचे एक गर्डर टूट चुका है। न जाने प्लेटफार्म कब टूट जाए।
चिन्ता मत करो नागराज! यह 'ऑयल प्लेटफार्म' बहुत संतुलित है। इसके तीन गर्डर भी टूट जाएं तो भी यह सिर्फ एक गर्डर पर...
...खड़ा रह सकता है!
ओ माई गॉड! देखते ही देखते पूरा प्लेटफार्म धंस रहा है!

लेकिन... लेकिन यह कैसे? डॉक्टर मित्रा तो कह रहे थे कि यह ऑयल रिंग प्लेट फार्म बहुत संतुलित अवस्था में है।...
... खैर, अब तो यह लगभग डूब चुका है। लेकिन रिंग पर मौजूद सारे लोग पानी में कूद चुके हैं। इनको एक-एक करके बचाने में काफी लोग डूब जाएंगे...
... क्योंकि इतने विशालकाय प्लेटफार्म के डूबने से पानी में एक भंवर पैदा हो गया है, जो पानी में मौजूद लोगों को नीचे खींच रहा है!...
... इनको एक साथ ही बचाना होगा।...
... और उसके लिए मुझे जरूरत पड़ेगी...
... एक विशाल जाल की। सर्प जाल की!
जिससे मैं सारे लोगों को एक साथ समेट सकता हूं।... अब यह सर्प जाल पानी पर तैरता रहेगा।... और मैं इनको साथ लेकर...

...तैरकर उस जहाज तक पहुंच जाऊंगा, जो कुछ देर पहले ऑयल रिंग के पास से गुजरा था।
जल्दी ही, सारे कर्मचारी जहाज पर सुरक्षित पहुंच चुके थे-
शुक्र है नागराज का, जो वक्त पर वहां पहुंच गया। हमको उसका शुक्रिया...अरे...
...नागराज कहां गया?
अरे, नागराज तो आता-जाता रहता है।...
...मुझे तो राज की चिन्ता हो रही है। वह न जाने कहां गया?
बचाओ!...गडब! म...मुझे ऊपर खींचो!
लो, वह रहा तुम्हारा राज डॉक्टर मित्रा!
कमाल है राज! तुम कहां चले गए थे? जाल में बंधे लोगों में भी तुम नहीं थे!
हां, हां! मैं जानबूझकर जाल से बचकर बाहर ही रह गया था। क्योंकि मुझे सांपों से बहुत डर लगता है। और वहां तो सांपों का पूरा जाल था!
मैं अपने-आप तैरकर आप लोगों के पीछे-पीछे आ गया!
खैर! हमारा सपना तो पानी में डूब गया! मुझे तो अब तक समझ में नहीं आया कि प्लेट-फार्म पानी में डूब कैसे गया? उसको हमने बहुत मजबूती और कुशलता के साथ बनाया था।...
...अब तो कारण तभी पता चल पाएगा, जब उसके मलबे को बाहर निकाला जाएगा।
मलबा बाहर नहीं निकाला जा सकेगा डॉक्टर मित्रा! क्योंकि नीचे मलबा कहीं है ही नहीं। इन लोगों को जहाज पर चढ़ाने के बाद मैं एक बार फिर समुद्र तल तक गया था...

... यह देखने के लिए कि उस प्राणी का क्या हुआ ? लेकिन वहां पर तो कुछ भी नहीं था। न ही ऑयल रिंग का मलबा, और न ही वह प्राणी!
समुद्र तल में एक गड्ढा तक नहीं मिला मुझे। ऐसे गायब हो गई थी हर चीज, जैसे वहां पर कभी थी ही नहीं।

लेकिन 'ऑयल रिंग' जैसी बड़ी चीज ऐसे बिना कोई निशान छोड़े गायब नहीं हो सकती। वह कहीं न कहीं परती है ही!
लेकिन कहां पर है, और उसे उस स्थान तक पहुंचाया कैसे गया?

वह 'ऑयल रिंग' कहां पर थी, इसका तो पता नहीं, लेकिन 'ऑयल रिंग' ले जाने वाला प्राणी जरूर एक अन्जान स्थान पर मौजूद था-
नागराज का विषदंश उसकी जान ले सकने में असफल रहा था-
य... यह क्या धामिन ? तुम्हारी यह दशा कैसे हो गई ? तुम्हारा एक पैर कहां गया ? क्या तुम्हारे जैसा योद्धा अपने अभियान से असफल होकर लौटा है ?

नहीं, सैन्याधिपति! अभियान तो सफल रहा। परन्तु अपनी एक टांग मुझे अपने हाथों से ही काट देनी पड़ी!
मगर क्यों, धामिन ?
स्वयं काट देनी पड़ी ?

जवाब में धामिन, सैन्याधिपति की पूरी कहानी सुनाता चला गया–
और फिर उसका विष, शरीर में फैलते ही मेरा शरीर गलना शुरू हो गया। अगर मैं अपना पैर काटने में पलभर की भी देर करता, तो जहर पूरे शरीर में फैल जाता...
... मुझे मृत समझकर वह मानव वहां से चला गया, और अपने पैर को काटने के बाद मैं दर्द से तड़प तो उठा, परन्तु अपना काम पूरा करके ही वापस लौटा।
शाबाश धामिन! यानी नागपाताल पहली बाजी हारते-हारते भी जीत गया!
अब इससे पहले कि मानव सावधान हो सकें, हमको पूरी तरह से हमला बोल देना है। परन्तु यह जहरीला मानव हमारी योजना में अड़चनें डाल सकता है। उसमें और क्या-क्या शक्तियां थीं?
यह मैं देख नहीं सका! क्योंकि मैं उसको सिर्फ अपनी कुंडली की मदद से ही टटोल पा रहा था। मेरा सिर तो समुद्र तल के अन्दर था!
हमला तो थल यानी भूमि से ही शुरू करना होगा, सैन्याधिपति, क्योंकि मानव मुख्यतः थलचर है। और रही उस विषमानव को ढूंढने की बात, तो उसके लिए एक योजना है मेरे दिमाग में। मानवों ने समाचार-संकलन के लिए कई संस्थान बनाए हुए हैं। उन संस्थानों में ऐसे मानव के विषय में पूरी जानकारी मिल सकती है।...
यह पता करना बहुत जरूरी है धामिन, कि वह मानव कौन है! अगर वह जल-मानव है तो फिर हम अपना हमला थल से शुरू करेंगे।...
वह मानव जहां पर मुझसे टकराया था, उसके सबसे पास जो भी ऐसा संस्थान हो, वहीं पर जाकर जानकारी एकत्रित करना, सबसे उत्तम रास्ता है।
उपाय उत्तम है। मैं अभी अपने सबसे खास गुप्तचर शंकू को इस काम पर लगा देता हूं।

तभी- वह कक्ष चारों तरफ से कांप उठा-
यह क्या? एक और कंपन!
कुछ पलों तक वातावरण में एक गर्जना, और चट्टानों के गिर कर भूमि से टकराने की आवाजें गूंजती रहीं-
और फिर चारों तरफ धूल के साथ शान्ति छा गई-
इस बार का कंपन पहले कंपनों से अधिक तीव्र था, सैन्याधिपति!
बाहर से ये रोने के स्वर कैसे आ रहे हैं, द्वारपाल?
इस बार का कंपन काफी नुकसान पहुंचा गया है सैन्याधिपति।
कुछ चोट लगने के कारण कराह रहे हैं, और दो नागों के प्रियजन उनकी मौत पर शोक मना रहे हैं!
और यह सब मानवों के कारण ही रहा है। अब जो तबाही यहां पर आई है, उसको हम भूतल पर पहुंचाएंगे।
अब ये तबाही टूटेगी मानवों के सिर पर!

आश्चर्य! 'बरमूडा त्रिकोण' के बारे में तो सुना था, जहां पर पानी के जहाज और वायुयान गायब हो जाते थे! पर 'ऑयल रिंग' जैसी विशाल चीज गायब हो जाए, यह तो कभी नहीं सुना।

हो सकता है कि यह एक घटना किसी बड़े घटनाक्रम की शुरुआत हो। तुम इस क्षेत्र में बने अन्य तेल कुओं के तलों को भी चेक कर लो।...

...और इस दौरान मैं ऑफिस पहुंचकर 'ऑयल रिंग' गायब होने की घटना पर और जानकारी एकत्रित करने की कोशिश करती हूं।

ठीक है मेडम भारती! आपका सुझाव मान लिया गया। पर मिस्टर राज आज ऑफिस देर से पहुंचेंगे। उनको डांटिएगा मत।...

...भारती के तर्क में दम लग रहा है।... लेकिन अगर कोई घटनाक्रम जन्म ले रहा है तो इस तबाही का कारण क्या है?

और इस तबाही से किसको फायदा मिल सकता है?

नागराज अगर यह जानता कि इस घटनाक्रम से फायदा उठाने वाला शख्स उसकी बगल से ही गुजर रहा है तो वह शायद तबाही होने से पहले ही तबाही को रोकने की कोशिश कर सकता था-
और अगर शंकू यह जानता कि वह जिसको ढूंढने आया है, वह उसके सिर के ठीक ऊपर उड़ता हुआ आ रहा है, तो शायद वह असावधान नागराज को जिन्दा ही न छोड़ता। दोनों संभावनाओं में से कुछ भी हो सकता था, पर हुआ कुछ भी नहीं-
भारती
यह संस्थान मेरे लिए एकदम उपयुक्त जगह लगती है!...
...यहां मेरे लिए काफी जानकारी उपलब्ध होगी!
सुबह का वक्त हो चुका है। मानवों की भीड़ इस संस्थान में काम करने आती ही होगी।...
...मुख्य द्वार से जाना खतरनाक होगा। दूसरे रास्ते से ऊपर जाना होगा!
शंकू की जीभ लम्बी होकर इमारत से लिपट गई-
सुबह की धुंध में अपने-आपको छिपाते हुए शंकू का शरीर अपनी जीभ के सहारे लटककर ऊपर की तरफ बढ़ने लगा-
और किस्मत या बदकिस्मती से वह जिस कमरे के बाहर जाकर रुका, वह 'भारती कम्युनिकेशन' की मालिक, मिस भारती का कमरा था-
इस कक्ष में काफी उपकरण लगे हुए हैं। यहां से मुझे वह जानकारी मिल सकती है जिसके लिए मैं यहां आया हूं!
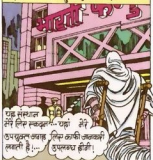
इस वक्त बहुत सारे घटनाक्रम एकसाथ चल रहे थे-

शंकू भारती के केबिन में नागमानव से संबंधित जानकारियां ढूंढ़ रहा था-

वहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर नागराज तेल कुओं के आस-पास के समुद्री तल की किसी संभावित गड़बड़ी के लिए ध्यान रहा था-

... अभी तक तो कहीं पर भी किसी गड़बड़ी का कोई लक्षण नहीं दिख रहा है।

और महानगर से दूर- भारत की राजधानी दिल्ली में-

एक और शख्सियत का तार इस घटनाक्रम से जुड़ने वाला था-

तुम हर समय किस सोच में डूबी रहती हो चन्दा भाभी? जो कुछ हो गया, उसे बुरा सपना समझकर भूल जाओ। वर्ना सारे वक्त ऐसे ही सिर दर्द होता रहेगा, और तुम माथे पर यह पट्टी बांधे रहोगी। लाओ, मैं पट्टी उतारकर बाम मल दूं!

न... नहीं, नहीं ममता! पट्टी को रहने दो। मुझे इससे ज्यादा आराम मिलता है। बाम से तो सिर दर्द और बढ़ जाता है।...

... वैसे भी अगर यह पट्टी उतर गई तो तुम वह देख लोगी, जो मेरा सारा भेद खोल देगी!

★ चंदा का भूतकाल जानने के लिए इंतजार करें डोगा के विशेषांक 'डोगा-शक्ति' # 111 का।

★ ममता पाठक यानी प्रलयंका के विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें— परमाणु सीरीज का 'कहर' # 51, अंगार # 629, गुणाकर # 638

और तुम बन्द केबिन के अन्दर घुसे कैसे?
मुझे तो यही पता था कि मानव अपने कार्यालय सुबह नौ बजे तक पहुंचते हैं। तू जल्दी कैसे आ गई? और तू मुझे देखकर डरी क्यों नहीं?
तुम जैसे जोकरों से क्या डरना? तुम्हारे जैसे नमूने मैं बहुत देख चुकी हूं!
खैर, तेरे जल्दी आने से शायद मेरा कीमती समय बच जाए।
बता, नागराज कौन है? उसकी शक्तियां क्या हैं? और वह मुझे कहां पर मिलेगा?
नागराज? इस नाम का कोई आदमी मेरे ऑफिस यानी कार्यालय में काम नहीं करता!
ठीक है! यानी सीधी तुम से जानकारी नहीं निकलेगी! तुम जरा टेढ़ी करनी पड़ेगी!
यह संयोग नहीं हो सकता! आज ही सुबह नागराज का एक अजीब प्राणी से टकराव हुआ। एक पूरी की पूरी 'ऑयल रिंग' गायब हो गई। और उसके कुछ ही घंटों बाद एक रहस्यमय सर्प मेरे ऑफिस में नागराज की तलाश कर रहा है। ...
वैसे इस सर्प में अद्भुत शारीरिक शक्ति है! इससे लड़कर निपटना संभव नहीं होगा!
इसकी बातों में उलझाना होगा।
सुनो, सुनो! नागराज का पता मैं एक शर्त पर बता सकती हूं।

कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

तू... तूने यह कैसे जाना कि मैंने... यानी हमने ही वह लोहे का ढांचा गायब किया है।...
हो सकता है मैं काफी कुछ और भी जानती होऊं। वैसे नागराज का पता न बताकर मैं तुम पर एहसान कर रही हूं!
एहसान? यानी तू शुकू पर तरस खा रही है? वह क्यों लड़की?
क्योंकि अगर तुम नागराज का पता जान गए तो उससे लड़ने जरूर जाओगे। और बेकार में नागराज के हाथों अपनी जान गंवा बैठोगे!
मैं जान गंवा बैठूंगा। यह कहकर तूने मेरा घोर अपमान किया है। अब यह अपमान तेरी जान लेकर ही दूर हो सकेगा।
चाहे तू नागराज का पता बताए या न बताए।
यह गुस्से से पागल हो गया है। और इतनी देर में मैंने इससे निपटने का रास्ता सोच लिया है!
अब यह फिर गुस्से में अपनी दुम को फटकारेगा।
और उसी पल मैं स्विच बोर्ड का यह कवर खींच-कर...
...इसकी दुम को बिजली के नंगी तारों से छुआ दूंगी!
शुकू का शरीर, करेंट से झनझना उठा-
इस दृश्य को दो आंखें बड़े ध्यान से देख रही थीं। नागराज ने अपने कुछ जासूस सर्पों को 'भारती कम्युनिकेशन्स' की इमारत के पहरे पर भी लगा रखा था-
ओह! इस घटना की सूचना नागराज को देनी चाहिए!

जासूस सर्प के मानसिक संकेत कई किलोमीटर की दूरी पल भर में पार करके, नागराज तक जा पहुंचे –
ओह! भारती खतरे में है। मुझे तुरन्त यहां की छान-बीन को बीच में रोककर, 'भारती कम्युनिकेशन्स' की बिल्डिंग तक पहुंचना होगा!
नागराज को भारती तक पहुंचने में थोड़ा वक्त लगना था–
लेकिन भारती को लग रहा था कि उसने शंकू से यह लड़ाई जीत ली है –
पुलिस को बुलाती हूं।
और उसकी यही निश्चिंतता भरी बेखबरी –
उसकी मौत का कारण बनने जा रही थी–
अक!
स
रट
भारती के मस्तिष्क में बम से धमाके फटने लगे–
और उसके घुटते गले से तो नहीं, लेकिन दिमाग की कोशिकाओं में एक ही शब्द बार-बार उभरने लगा–
बचाओ!

और वहां से मीलों दूर बैठी चन्दा के मस्तिष्क में यह पुकार गूंजने लगी-
बचाओ!
ओह! किसी स्त्री पर कोई अतिशक्तिशाली पुरुष अत्याचार कर रहा है। मुझे तुरन्त वहां पर पहुंचना होगा। ...
... मैं अभी...
लेकिन इससे पहले कि चन्दा अपना रूप बदलने का प्रयास कर पाती-
लो भाभी! कॉफी पियो। सरदर्द में आराम मिलेगा!
र... रख दे ममता! मैं थोड़ी ठंडी करके पीती हूं कॉफी! तू... तू जा, काम कर!
मुझे कोई काम नहीं है भाभी! मैं तुम्हारे सामने बैठकर ही कॉफी ठंडी कर देती हूं। थोड़ी गप-शप भी मार लेंगी इसी बहाने!
शायद इधर-उधर की बात करने से भाभी का दिल बहले। इनका दिमाग बदले!
ओह! जब तक ममता मेरे सामने रहेगी, तब तक मैं रूप नहीं बदल पाऊंगी।
जल्दी ही कोई न कोई रास्ता निकालना होगा। वर्ना उस स्त्री की जान चली जाएगी!
बचाओऽऽ
बचाओ!
चंदा, दो रूप होने की मुश्किलों का पहला स्वाद चख रही थी-
और महानगर में भारती के दिमाग पर अंधेरे की पर्तें और मोटी होती जा रही थीं-
बस बहुत बर्बाद कर लिया मैंने अपना कीमती समय!...

...अब तू अपनी मौत के रास्ते पर चलना शुरू कर दे। जितनी देर में तेरा शरीर जमीन से टकराएगा...
... उतनी देर में मैं अपने मतलब की चीज ढूंढ लूंगा।
लो! कहते ही मिल गई मुझे मेरे मतलब की चीज।
इस पर नागराज का नाम लिखा है। जरूर इसमें नागराज से संबंधित जानकारी मौजूद है।...
उसको देखने की कोई जरूरत नहीं है।...
?
... क्योंकि नागराज खुद तेरे सामने खड़ा है। बोल, क्या चाहता है तू मुझसे?
हा हा हा! आज तो मैं जो मांगता मुझे मिल जाता। मुझे तेरी मौत चाहिए नागराज! वैसे अगर तू चुपचाप शंकु के साथ चलने को तैयार हो, तो शंकु तेरी जान बख्श भी सकता है।

पांबी
अपनी और तुम्हारी बात तो मैं बाद में करूंगा !...
... सबसे पहले तुझे भारती की जान से मारने की कोशिश करने की सजा तो दे दूं !
तड़ाक
यह तो संयोग था कि मैंने यहां ऐन वक्त पर पहुंचकर भारती की नागरत्नी की मदद से बचा लिया !...
... वर्ना आज कुछ भी हो सकता था।
आहा ! तो तू अपने-आपको न्यायाधीश समझ रहा है। सजा देने वाला।
लेकिन तुझे जान से मारने की सजा मुझे कौन देगा, यह मरने से पहले बताते जाना।
लगता है जैसे मेरा जबड़ा टूट गया हो। इतने तेज वार, मैंने अपनी जिन्दगी में कम ही खाए हैं।
अद्‌भुत शक्ति है इस नागमानव शंकू में। इसकी शक्ति देखकर मुझे वह प्राणी याद आ रहा है, जिसकी सूंड ने मुझे समुद्र के नीचे दबोच कर रखा था !
तड़ाक
लेकिन यह आया कहां से है ?
मेरी उस प्राणी से लड़ाई होने के बाद ही यह शंकू मुझे ढूंढता हुआ यहां तक आ गया है !
पृथ्वी के लगभग सभी सर्पों से परिचित होने के बावजूद मैं इसे नहीं जानता !

लेकिन इसकी शक्ति देखकर मुझे लग रहा है कि यह लड़ाई अगर जल्दी खत्म नहीं हुई तो यह शंकू मुझ पर हावी हो सकता है। ...

... विष फुंकार का प्रयोग करना खतरनाक होगा। क्योंकि उसकी महक से बेहोश भारती को भी खतरा पहुंच सकता है। ...

... इसकी नागरस्सी से जकड़ने की कोशिश करता हूं। ...

... और नागों को आदेश देता हूं कि इसको किसी भी स्थिति में आजाद न होने दें!

ये धरातल के कमजोर नाग मुझे पकड़ नहीं सकते, नागराज! इनको तो मैं तिनके की तरह उड़ा दूंगा।

अपनी अतिमानवीय शक्ति से शंकू ने नागरस्सी को तोड़ डाला—

लेकिन फिर अगले ही पल नागरस्सी के टुकड़े उसके शरीर से वापस लिपट गए—

शंकू बार-बार नागरस्सी को तोड़ता रहा—

लेकिन नागों ने भी उसको न छोड़ने की कसम खाई हुई थी—

ये तो जोंक की तरह मुझसे चिपट गए हैं। अब इनको मौत देने के अलावा मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है। ...

... मुझे अपने शरीर के अन्दर संचित नागों की ऊर्जा का प्रयोग करना होगा!

अचानक ही शंकु के शरीर का तापमान तेजी से बढ़ने लगा–
?
देखते ही देखते उसका शरीर लावे सा लाल होकर दहकने लगा–
उसके शरीर पर लिपटे नागों की राख का ढेर बनने में पलभर भी नहीं लगा–
अब तेरी बारी है नागराज...
...तेरी मौत, अंत्येष्टि और अस्थि-विसर्जन सब एक साथ कर दूंगा।
आश्चर्य! इसने अपने शरीर के बढ़ते तापमान को 'लावे की ऊर्जा' कहा...
...आखिर इस बात का क्या मतलब हो सकता है?
IN CASE OF
FIRE
'लावा' तो पृथ्वी के अन्दर होता है। क्या यह प्राणी पृथ्वी के अन्दर से आया है! खैर...
...कहीं से भी आया हो? सबसे पहले तो इसको ठंडा करना होगा!
तेरी सारी शक्तियां मुझ पर बेअसर हैं, नागराज! और मेरी ऊर्जा को तू किसी भी साधन से बुझा नहीं सकता।...
...मुझको खतरा सिर्फ तेरे विषदंश से है। और उसके लिए मैं तुझको अपने पास पहुंचने ही नहीं दूंगा!
अब तुझे राख का ढेर बनने से कोई नहीं बचा सकता!
यह मेरे विषदंश के बारे में कैसे जानता है?

इसका बदन तो इतना दहक रहा है कि ये जहां पर भी हाथ लगा रहा है, वह चीज गलने आ रही है! चाहे वह स्टील की आलमारी हो या कंक्रीट का फर्श!

सिर्फ इसने अपनी पूंछ को ठंडा रखा है, वर्ना यह जहां खड़ा होता, उसके नीचे का फर्श ही गल जाता। इसकी पूंछ में विष दंश गड़ाने की कोशिश करनी चाहिए।

लेकिन शंकू नागराज की इस चाल को भांप गया था-

दांत गड़ा पाने से पहले ही दुम के एक भीषण वार से नागराज दूर जा गिरा-

तड़ाक

और पीछे से गर्दन कसने के कारण नागराज, जीभ पर विषदंश भी नहीं गड़ा सकता था-

और वहां से दूर- दिल्ली में चन्दा भी ममता से पीछा छुड़ाने के लिए गर्मी का ही इस्तेमाल कर रही थी-

आऊ!

ओ, भाभी! यह क्या किया? गर्म-गर्म कॉफी अपने ऊपर गिरा ली!

जलीं तो नहीं?

नहीं ममता! कॉफी ठंडी हो गई थी! पर कपड़े बदलने पड़ेंगे। सोच रही हूं कि नहा ही लूं!

गुड आइडिया भाभी!

काश, यह आइडिया थोड़ा पहले आ जाता! यहां पर मुझे रूप बदलते कोई नहीं देख पाएगा।
चन्दा का शरीर एकाएक चमकने लगा। पूरा बाथरूम एक अंधा कर देने वाली रोशनी से भर गया–
और उस बाथरूम से निकलकर 'डक्ट' के रास्ते इमारत से बाहर निकलने वाले उस प्रकाशपुंज को कोई नहीं देख पाया–
जो प्रकाश की गति से महानगर स्थित भारती कम्युनिकेशन्स की इमारत की तरफ बढ़ रहा था–
वहां पर– जहां जिन्दगी और मौत में सिर्फ चन्द सांसों की दूरी थी–
आह! इसकी जीभ मुझे जला तो रही है। पर इस चक्कर में इसने मुझे वह मौका दे दिया है, जिसकी मुझे तलाश थी!
क्योंकि चाहे मैं इसको सर्परस्सी द्वारा पकड़ूं या ये मुझे जीभ द्वारा पकड़े, हम दोनों के शरीर तो आपस में बंध ही गए हैं।
अब मैं एक बार देवकालजयी का नाम लेकर हाथों की जलन सहकर, इसकी जीभ पकड़ लूं...
घररररम
... तो मैं इसको घुमाकर दीवार पर मार सकता हूं!
अब इसका दहकता शरीर दीवार को गलाता हुआ...

... इमारत से बाहर निकल जाएगा। और इस झटके से यह मेरी गर्दन को भी आजाद करने पर मजबूर हो जाएगा। मेरी जली गर्दन को तो मेरी नागशक्तियां कुछ ही पलों में ठीक कर देंगी...

... लेकिन शंकु जमीन से टकराने के बाद बेदम हो जाएगा। इसकी अतिमानवीय शक्ति इसको मरने तो नहीं देगी, लेकिन यह इतना घायल जरूर हो जाएगा कि मैं इस पर काबू ... अरे ...

शंकु के अन्दर जाने के साथ-साथ गड्ढा भी भरता जा रहा है! आश्चर्य!

अब मैं इसके पीछे भी नहीं जा सकता। क्योंकि इसने कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा है।

... ये तो गिरते-गिरते अपना हाथ बढ़ा रहा है। और उससे ऊर्जा भी निकल-कर जिस स्थान से टकरा रही है, वहां पर एक गड्ढा बन रहा है...

नागराज, मैं अपनी बहुत ऊर्जा खर्च कर चुका! अब मैं तेरे सामने टिक नहीं पाऊंगा। पर याद रखना, न तो तू बचेगा और न ये शहर!

भारती अब तक होश में नहीं आई है। इसको लेकर डॉक्टर के पास जाना होगा!

नागराज उस प्रकाशपुंज को नहीं देख पाया था, जो केबिन में प्रविष्ट हो रहा था—

और एक निश्चित आकार धारण कर रहा था–
बस, दुष्ट! वहीं रुक जा! अब मैं तुझे इस स्त्री पर और अत्याचार नहीं करने दूंगी।
अब कौन? अरे!
क...कौन हो तुम?
'शक्ति' कहकर संबोधित कर मुझे दुष्ट! मैं हूं पुरुषों के अत्याचार के खिलाफ नारी के विद्रोह की आवाज! जब भी किसी स्त्री पर अत्याचार होता है, तो उसकी चीख सुनकर 'शक्ति' मदद को जरूर पहुंचती है।...
?
...अत्याचारी को दंड देने के लिए।
भारती की पुकार पर थोड़ी देर से पहुंची चन्दा यानी शक्ति, शंकू के स्थान पर नागराज को पाकर उसे ही अपराधी समझ बैठी थी–
और नागराज के लिए इस जटिल स्थिति को समझ पाना बहुत मुश्किल था–
तड़ाक
यहां तो कुछ और ही कहानी है। पहली नजर में तो मैं इसको शंकू का साथी समझ बैठा था।

मेरे खड्ग को गिराकर तू समझता है कि तूने जंग जीत ली। लेकिन मैं शक्ति हूं। देवी मां के आशीर्वाद द्वारा प्राप्त की गई शक्ति।
मैं जिस धातु पर हाथ रख देती हूं, वह पिघलकर हथियार बन जाता है।
शक्ति के हाथों से तीव्र ऊष्मा पैदा होकर टेबल के फ्रेम को गलाने लगी-
और फिर वह गली हुई धातु...
...एक आकार धारण करने लगी-
वह आकार, जो जान-लेवा था-
सांय सांय
लेकिन सिर्फ एक आम आदमी के लिए-
नागराज के लिए नहीं-
अरे! यह क्या? तुझ पर खंजरों का कोई असर नहीं हुआ?
नहीं! नागराज पर ऐसे हथियारों का कोई असर नहीं होता है शक्ति।...
...बस थोड़ी सी गुदगुदी जरूर हुई। वैसे तेरी शक्तियां मुझे कुछ अद्भुत और खतरनाक लग रही हैं। और मैं तुझको उन शक्तियों का प्रयोग करके अपनी जान लेने दे सकने के मूड में नहीं हूं।
नागराज की नागशक्तियां सरसरा उठीं-
लेकिन उससे पलभर पहले शक्ति का हाथ, एक बार फिर टेबललैंप के 'मेटल स्टैंड' पर कस चुका था-

और नागों के पास पहुंचते ही शक्ति का हाथ बहुत तेजी से घूमने लगा-
और जब उसका हाथ रुका तो नागराज के सारे नाग, सीक कबाब की तरह धातु की उस नुकीली छड़ से लटक रहे थे-
आश्चर्य है। इतनी फुर्ती तो मैंने अपनी जिन्दगी में कभी नहीं देखी।
इसको एक मौका भी और देना अपनी जान का सौदा करने के बराबर होगा। वैसे भी शंकु से हुई लड़ाई ने मुझे थका दिया है। इस शक्ति को जल्द से जल्द काबू में करना ही होगा।
फुऊऊऊ
और शक्ति लड़खड़ा गई-
आह! इसके मुख से निकली फुंकार से तो मेरा सर चकरा गया है। जरूर यह विषफुंकार है। इसकी इस शक्ति से बचने के लिए इस छोटे से कक्ष से बाहर निकल कर खुली हवा में जाना होगा।
नागराज ने विषफुंकार का प्रयोग किया-
और उस छड़ से बने लोहे के तार पर झूलकर शक्ति नीचे पहुंच गई-
वेरी गुड। इसने वही किया जो मैं चाहता था। वर्ना यहां मेरी शक्तियों के प्रयोग से भारती को भी नुकसान पहुंच सकता था।
नागराज ने भी शक्ति के पीछे जाने में समय व्यर्थ नहीं किया-
भागने से पहले यह तो बताती जा शक्ति कि तू आई कहां से है?...और है कौन?
शक्ति का हाथ, इमारत के ढांचे में लगी सरियों पर कस गया-
जरूर बताऊंगी नागराज! लेकिन आराम से।

... क्योंकि मेरा भागने का इरादा कतई नहीं है।
लोहे की मजबूत छड़ें, नागराज के चारों तरफ के कंक्रीट पेवमेंट में धंसने लगीं–
ठंग
ठंग
और कुछ ही पलों बाद, नागराज शक्ति द्वारा बनाई गई जेल में कैद था–
अब तू कहीं भाग नहीं सकता नागराज! और खुले में मैं तेरी शक्तियों को आराम से निष्क्रिय कर सकती हूं।
वैसे अब मुझे तुझसे लड़ने की भी कोई जरूरत नहीं है।
उस लड़की की गवाही पर कानून खुद तुझे सजा देगा। अब तू यहां कानून के रखवालों का इन्तजार कर, और मैं चलती हूं।
आमतौर पर तो मैं अपनी शारीरिक नागशक्ति का प्रयोग करके ऐसी छड़ों को उखाड़ फेंकता हूं। पर न जाने क्यों मेरा मन कर रहा है कि मैं भी तुझे अपनी शक्तियां दिखाऊं।
...प्रयोग करूंगा।
कहो, कैसी रही?
इसलिए मैं इस 'जेल' से बाहर निकलने के लिए...
... इच्छाधारी शक्ति का...
तू... इच्छाधारी नाग है। ओह! तेरी शक्तियों को मैंने कम आंका था...
...अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगी।

ले! अब मैं तुझे एक नई शक्ति दिखाती हूं।
शक्ति ने जमीन पर हाथ रखा, और जमीन में मौजूद धातु के कण उसके हाथ की उष्मा को ग्रहण करके पिघलने लगे–
और नागराज के कुछ समझ पाने से पहले ही पिघलती धातु की एक लकीर नागराज की तरफ लपकी–
और नागराज को तेजी से चारों तरफ से ढकने लगी–
ओह! मैं हिल भी नहीं पा रहा हूं।
कुछ ही पलों में नागराज धातु के एक कवच में ढक गया था–
हा हा हा! अब तू इस कैद से आजाद नहीं हो पाएगा!
अरे, यह क्या हो रहा है? कौन हो तुम?
और... नागराज को तुमने इस पिघली धातु में कैद क्यों कर दिया है?
ओह! तू तो वही लड़की है, जिस पर नागराज अत्याचार कर रहा था। शक्ति, नारियों पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं करती।
पर ये तुमने कैसे जाना कि मुझ पर नागराज अत्याचार कर रहा था?
मुझ पर तो शूकू नाम के एक नागमानव ने घातक हमला किया था। नागराज ने तो मुझे बचाया होगा। पर तुम यह सब कैसे जानती हो?
ओह!...
मैं तुम्हारी पुकार सुनकर यहां पर आई थी। और यहां पर मुझे सिर्फ नागराज ही मिला। मुझसे चूक हो गई। मैं अभी धातु पिघलाकर नागराज को बाहर निकाल लेती हूं!

उसकी जरूरत नहीं है शक्ति!
मैं पहले ही कवच से बाहर निकल चुका हूं। तुमने मुझे चारों तरफ से तो धातु से ढक दिया था।...
...लेकिन मेरे पैरों के नीचे धातु नहीं जमीन थी।
बस, मेरे सर्पों ने मेरे पैरों के नीचे की जमीन खोद दी और मैं उससे बनी सुरंग के रास्ते बाहर निकल आया।
लेकिन मेरा काम अधूरा रह गया। जब तक मैं उस शुंकू को दंड नहीं देती, तब तक मेरा काम अधूरा ही रहेगा नागराज!
मैं समझता हूं शक्ति! शुंकू की तो मुझे भी तलाश है! हम दोनों मिलकर भी उसे ढूंढ सकते हैं।
मुझे तुमसे माफी मांगनी है नागराज! अंजाने में मैं तुमको दुश्मन समझ बैठी।
यह तो मैं शुरू से जानता था। इसी लिए मैं तुम पर हमला नहीं, सिर्फ अपना बचाव कर रहा था।
अभी मुझे वापस जाना है नागराज! मैं रुक नहीं सकती।
कोई बात नहीं। मैं अपने एक सर्प को सूक्ष्म रूप में तुम्हारे साथ भेज देता हूं। उससे मेरा मानसिक संपर्क बना रहेगा। हममें से जो भी पहले शुंकू को ढूंढ लेगा, वह दूसरे को सर्प के माध्यम से सूचित कर देगा।
ठीक है नागराज! अब मैं चलती हूं।
शक्ति का शरीर फिर से चमकने लगा–
और फिर–
आश्चर्यजनक शक्तियां हैं इस स्त्री में। यह आखिर है कौन नागराज? पहले तो कभी नहीं देखा इसे!
यह जो भी है
सच्चाई के साथ है।
हमारे साथ है। मुझे
पूरी उम्मीद है कि
जल्दी ही इससे
बार फिर मुलाकात
होगी!
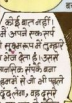
और दिल्ली में–
ओफ्! कितना टाइम लगा रही हो, चन्दा भाभी! जवाब तो दो कम से कम!
कम से कम 'हां' तो कह दो! तबियत तो ठीक है न?
एकदम ठीक टाइम पर पहुंची।
अब फटाफट कपड़े बदल लूं।
क्या, भाभी? कब से चिल्ला रही हूं? सुनाई नहीं पड़ा क्या?
तू बुला रही थी? सॉरी ममता, शॉवर के शोर में कुछ सुनाई नहीं पड़ता!
चलो, कोई बात नहीं! तुमने तो मुझे 'घबरा' दिया भाभी।
अब माफ भी कर दे ममता! चल, मैं तुझे गर्मागर्म पकोड़े बनाकर खिलाती हूं।
यहां पर तो मामला, प्यार-मुहब्बत से सुलझ गया था–
लेकिन कहीं और पर मामला संगीन होने वाला था–
तड़ाक
मूर्ख, तू एक मानव को नहीं मार पाया? इतनी शक्तियां होने के बावजूद भी!
तुझे तक्षक महाराज के पास ले ही जाना होगा!
और फिर–
हूम! तू भाग आया! और वह भी सब मानवों के सामने भूमि के रास्ते से! तूने मानवों को इसका स्पष्ट संकेत दे दिया कि तू कहां से आया है!
म...मेरी संचित ऊर्जा समाप्त हो रही थी महाराज!

तो अब तेरी नाकाम जिन्दगी भी समाप्त हो जानी चाहिए। इसको लावा कुंड में डाल दो!
ठहरो! दंड देने से पहले इसका पक्ष भी सुन लें।
म... महाराज, मैंने उस नागमानव को ढूंढ तो लिया था, पर मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह स्वयं उस स्थान पर आ जाएगा।
मैं उसकी शक्तियां भी पूरी तरह से नहीं जानता था। इसी कारण मुझसे यह चूक हो गई!
तुम्हारे तर्क में दम है, शंकू!
हम तुमको एक मौका और देंगे!
धन्यवाद महाराज!
मेरा भाग्य अच्छा है कि महाराज के क्रूर रूप पर उनका दयालु रूप हावी हो गया।
वर्ना मैं जिन्दा नहीं बचता!
लेकिन शंकू की हरकत से मानव सावधान भी हो गए होंगे, और उनको हमारे पृथ्वी के नीचे होने का पता भी चल गया होगा।
अब हम इन्तजार नहीं कर सकते। कल से ही पृथ्वी को भरने का काम शुरू कर देना चाहिए!
ठीक है! वैसे भी प्रतीक्षा करने का अब कोई कारण भी नहीं बचा है।
एक अजीबो-गरीब हमले की तैयारी शुरू हो रही थी—
लेकिन सतह पर के कुछ लोग इस हमले की संभावना को पहले ही भांप चुके थे—
शंकू का अपने शरीर की ऊर्जा को 'लावे की ऊर्जा' कहना और उसका भूमि में उसी तरफ गायब हो जाना, जैसे वह 'ऑयल रिंग' गायब हो गई थी, एक ही तरफ इशारा करता है!
और वह यह कि यह हमला जमीन के नीचे से किया जा रहा है!

लेकिन यह पता होने का फायदा क्या है नागराज? क्योंकि पृथ्वी के नीचे जाने का रास्ता पता चले बगैर हम न तो अपने दुश्मनों तक पहुंच सकते हैं, और न ही उनको रोक सकते हैं!
रास्ता भी पता चल ही जाएगा भारती! क्योंकि एक बार असफल होने के बाद वे एक बार फिर मुझ पर हमला जरूर करेंगे। और उस बार मैं उनके पीछे जाने को तैयार रहूंगा!
नागराज को हमले का आभास तो सही ही रहा था—
लेकिन हमला इस बार उस पर नहीं, बल्कि महानगर पर होने वाला था-
और वह भी सूरज की पहली किरणों के साथ-
हफ्! हफ्! चार किलोमीटर के चक्कर हो गए।
FITNESS TRAIL
JOGGER
महानगर घूमने आए संजय गुप्ता, यहां पर भी अपनी सुबह की रूटीन को बरकरार रखे हुए थे-
अब वापस चलना चाहिए।
अपनी कार की तरफ बढ़ते संजय के कदम एकाएक थम गए-
मिट्टी का एक ढेर, तेजी से ऊपर उठकर कारों को अपनी आगोश में ले रहा था-
MOTHER DAIRY
अरे! अरे!
यह क्या?
मेरी... मेरी कार मिट्टी में कैसे ढक गई?
संजय लाख कोशिशों के बावजूद भी मिट्टी की एक पर्त तक नहीं हटा पाए-
और कुछ पलों बाद जब वह पर्त अपने-आप हटी तो-
उनकी कार भी गायब हो चुकी थी-
और साथ ही वहां खड़ी हर वह गाड़ी, जिस पर मिट्टी की पर्त चढ़ी थी-
मेरी नवीं ओप्पल किथ्थे वड़ गई?
ये हादसा, जिसका उद्घाटन संजय गुप्ता की कार से शुरू हुआ था-

महानगर के दूसरे भागों में भी फैलने जा रहा था–
आज सुबह संचार भवन में एकाएक भीषण आग भड़क उठी। आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है।
इमारत को हेलीकॉप्टरों की मदद से खाली करा लिया गया है। किसी के भी हताहत होने की खबर नहीं है।
अरे! अरे! एकाएक इमारत पर मिट्टी की मोटी पर्त कैसे चढ़ रही है?
पर्त चढ़ती ही जा रही है। पूरी इमारत ढक गई है।
और कुछ ही पलों बाद जब पर्त टूटनी शुरू हुई तो–
अरे! इमारत गायब! मुझे तुरन्त घटनास्थल पर पहुंचना होगा।
नागराज तुरन्त घटनास्थल की तरफ रवाना हो गया–
यह वही हमला लग रहा है ... जिसकी भारती और मुझको आशंका थी। पर इस हमले का आखिर मकसद क्या हो सकता है?
और फिर घटनास्थल पर–
पक्का तो कह नहीं सकते नागराज, पर कुछ लोगों के अनुसार आग, जमीन के नीचे से आई थी लावे के रूप में।
पर इस आग से कम से कम यह फायदा हुआ कि जब इमारत गायब हुई तो वह खाली हो चुकी थी!
सभी अग्नि/आगजनी के कारण इमारत से भाग गए थे!

शायद इमारत को गायब करने वालों का, आग लगाने का कारण इमारत को खाली करवाना ही हो। क्योंकि वे सिर्फ इमारत को चाहते होंगे। इंसानों को नहीं!
तुम्हारी बात मेरी तो समझ के बाहर है नागराज! मेरा दिमाग तो यही सोचकर चकरा रहा है कि इतनी बड़ी इमारत गई तो गई कहां? जमीन में एक छेद तक नहीं दिख रहा है।
मुझे तुरन्त वहां पर पहुंचना चाहिए!
महानगर में देखा जा रहा यह खौफनाक नजारा...
...दुनिया के बाकी हिस्से में भी साथ-साथ देखा जा रहा था-
सर! सर! विज्ञान भवन में भी यही हो रहा है। वहां बिल्डिंग में एक खौफनाक सर्पमानव ने पहले तो सबको डराकर बाहर भगा दिया, और फिर विज्ञान भवन मिट्टी से ढकने लगा।
ओह! कहीं वह सर्पमानव शंकू तो नहीं?
ओ गॉड! पीसा की मीनार को ये क्या हो रहा है?
गुड हेवन्स! 'स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी' गायब हो गई? पर कहां?
सारी दुनिया में जगह-जगह से बांबियां पैदा होकर हर चीज को निगलने के लिए बेताब हो रही थीं-
और इस तांडव को रोक पाने का कोई रास्ता मनुष्यों को नहीं सूझ रहा था-
यही है विज्ञान भवन को निगलने वाली बांबी। अब देखता हूं कि शंकू भी इसमें है या नहीं!
शंकू! कहां हो? सामने आओ!
हा हा हा! मैं जानता था तू आएगा नागराज! जरूर आएगा। देख, मैंने कहा था न कि ये शहर नहीं रहेगा!
अब जा! कूद जा बांबी से। वर्ना जान से हाथ धो बैठेगा!
अगर तूने इस विनाश को तुरन्त नहीं रोका तो...
जान से हाथ तो तू धो बैठेगा शंकू!

हा हा हा! मुझे रोक सकने के सपने देखता रह नागराज! मैं तो चला!
ओह! शंकू इमारत सहित बहुत तेजी से नीचे आ रहा है। और साथ ही साथ इस बांबी का मुंह भी बन्द होता जा रहा है।
मुझे शंकू के पीछे जाना ही होगा। क्योंकि यह मुसीबत पृथ्वी के अन्दर से आई है, और इसको वहीं जाकर रोका जा सकता है!
नागराज, बिना एक भी पल गंवाए शंकू के पीछे कूद गया। उसको पूरी उम्मीद थी कि उसके पैर विज्ञान भवन की छत से टकराएंगे–
लेकिन विज्ञान भवन तो न जाने कहां गायब हो चुका था। और नागराज का शरीर जैसे एक अंधेरे कुएं में गिरता जा रहा था–
यह क्या? विज्ञान भवन कहां गया? मेरे गिरने की गति से तो ऐसा लग रहा है, जैसे मैं कई किलोमीटर नीचे गिर चुका हूं।...
... इस गति से अगर मैं कहीं टकरा गया तो मेरे पुर्जे-पुर्जे हो जाएंगे।
मुझे तो इस अंधेरे में कुछ भी नजर नहीं आ रहा है। शायद मेरे सर्पों को कुछ नजर आ जाए।
सर्पों को जल्दी ही एक उभरी चट्टान का कोना मिल गया–

और नागराज का नीचे गिरना थम गया–
कुछ ही देर में जब नागराज की आंखें, अंधेरे में देखने की अभ्यस्त हुईं तो–
ओह! बाल-बाल बचा। चट्टानी सतह कुछ सौ फीट की दूरी पर है। लेकिन... इस घुप्प अंधेरे में मैं देख कैसे पा रहा हूं?
देख सकने के लिए कुछ रोशनी तो जरूरी होती ही है। ओह! उस सुरंग से हल्की लाल रोशनी फूट रही है। शायद वही मेरी मंजिल का रास्ता है!
चट्टानों पर सांप की तरह चिपक कर नागराज नीचे उतरने लगा–
उस सुरंग के अंदर घुसते वक्त नागराज यह नहीं जानता था कि उस लाल रोशनी का स्रोत था...
...लावे का दहकता कुंड और इसको पार करने का एकमात्र रास्ता यह गोल और चिकना पुल है।
यहां पर उतरते ही मुझको अपना शरीर काफी भारी लग रहा है। मैं अपने हाथ और पैर को बड़ी ताकत लगाने के बाद चला पा रहा हूं...
...खैर! कोई बात नहीं। जल्दी ही मैं इसका अभ्यस्त हो जाऊंगा। वैसे भी यह रास्ता मुझे सांप की तरह चिपककर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए पार करना होगा।...
...क्योंकि मेरे सर्प, यह गर्मी सहन न कर पाने के कारण सर्प-पुल नहीं बना पाएंगे।

... और सर्प रस्सी फंसाने के लिए तो ऊपर छत कहीं नजर ही नहीं आ रही है।
चिकने और गर्म पुल पर, अपने भारी शरीर को धीरे-धीरे आगे बढ़ाता हुआ नागराज वह जोखिम भरा रास्ता पार करने लगा–
लेकिन दुश्मन को शायद नागराज की इसी हरकत का इन्तजार था–
अब यहां से आगे तू नहीं जा पाएगा नागराज।
हमको तेरे यहां तक पहुंच जाने का पूरा भरोसा था।
ओह! उड़न सर्प!
हां, उड़न सर्पों की टोली। हमको यहां पर सिर्फ तुझे ही रोकने के लिए तैनात किया गया है।
आह! ये मुझे लावे में गिराने की कोशिश कर रहा है। यानी या तो इनके अंदर शंकू जैसी ऊर्जा छोड़ पाने की शक्ति नहीं है, या वह शक्ति यहां पर काम नहीं करती।
तू दिमाग का सही इस्तेमाल कर रहा है नागराज! तू इस वक्त पाताल लोक की सीमा में है।...
... और हमारी ऊष्मा ऊर्जा छोड़ सकने की शक्ति इस सीमा से बाहर ही काम करती है।

★ पृथ्वी की सतह से, पृथ्वी के केंद्र की तरफ जितना जाया जाएगा, वस्तु का वजन उतना ही बढ़ता जाएगा।

राज कॉमिक्स
एक सर्प रास्ते से हट चुका था, और दूसरे का सिर झनझना रहा था-
लेकिन तीसरा सर्प नागराज की पीठ तक आ चुका था-
नागराज लड़खड़ाया-
और अगर वह मौत को टाल पाया, तो सिर्फ अपने हाथ की सतह पर चिपका पाने की शक्ति के कारण-
लेकिन शायद सिर्फ कुछ पलों के लिए-
क्योंकि चोट खाया नाग भी संभलकर, दूसरे नाग के साथ, नागराज को लावे में गिराने के लिए बढ़ रहा था-
तभी जैसे बिजली सी चमक उठी। जो दोनों नागों के शरीर से टकराकर, उनको बेहोश करती हुई-
एक खास आकृति में तब्दील हो गई-
शक्ति! तुम यहां तक कैसे पहुंच गईं?
तुमने शंकू को कहीं देखा था न? बस तुम्हारी उसी मानस तरंग को तुम्हारे सूक्ष्म नाग ने पकड़ लिया।
और वही तुम्हारी मानस तरंग का पीछा करता-करता एक बांबी के रास्ते मुझे यहां तक ले आया!
लेकिन यहां की स्थिति देखकर लगता है कि मैं बिल्कुल सही समय पर यहां पहुंची...

हां, शक्ति! यहां पर जो कुछ मैंने देखा और सुना है, उससे यही समझ में आता है कि पृथ्वी पर आई तबाही में पाताल लोक के नागों का हाथ है। लेकिन कारण क्या है, यह मुझे नहीं पता!
पाताल लोक तो हम लोग पहुंच ही चुके हैं नागराज! अब आ गए हैं तो कारण भी पता कर लेंगे और उसका निवारण भी कर लेंगे। आओ!
यह पुल तो हम लोगों ने पार कर लिया। लेकिन खतरा अभी टला नहीं है शक्ति!
इधर संभलकर उतरना काफी तिरछा ढलान है, और चट्टानें भी काफी चिकनी हैं। शायद लावे से बनी ग्रेफाइट की चट्टानें हैं।
नागराज और शक्ति ने कदम तो बहुत संभालकर बढ़ाया था–
लेकिन दोनों ही चिकनी सतह पर अपना संतुलन कायम नहीं रख सके–
दोनों ही न जाने कितनी गहराई तक फिसलते चले गए–
ओफ्! न जाने कब खत्म होगी यह ढलान!
ढलान जल्दी ही खत्म हो गई–
ओह्ऽऽऽ! यह कहां पर आकर रुके हैं हम?
यहां पर आकर तो मुझे अपना वज़न इतना बढ़ा हुआ लग रहा है कि हाथ-पैर हिला तक पाना मुश्किल लग रहा है।
तुम लोग पाताल लोक के केन्द्र में आकर रुके हो नागराज!

और तुम लोग धरातल के पहले मानव होगे, जिनकी कब्र की गहराई छः फुट के बजाय ढाई सौ किलोमीटर होगी!
यह धमकी सिर्फ पाताल लोक के नाग ही दे सकते हैं। मगर धमकी के साथ-साथ यह भी बता दो कि आखिर तुम लोग पृथ्वी पर कहर क्यों बरसा रहे हो?
इसका उत्तर तो सिर्फ महाराज तक्षक ही तुझे दे सकते हैं नागराज! अगर तू उन तक पहुंच सकता! हम तो तुझे सिर्फ मौत ही दे सकते हैं।
आह! इन हथियारों से बचने के लिए मैं फुर्ती से हिल भी नहीं पा रहा हूं। अगर तलवार या खड्ग जैसे किसी वस्तु से मेरा कोई अंग कट गया तो उसे मेरी कोई शक्ति जोड़ नहीं पाएगी।
तुम अपनी विषफुंकार का प्रयोग करके इनको एक साथ बेहोश कर सकते हो नागराज!
हम लोग इस वक्त एक बन्द सुरंग में हैं शक्ति! विषफुंकार का प्रयोग करने से विषलहरें इस पूरी सुरंग में भर जाएंगी। और उससे इनके साथ-साथ तुम्हारी भी जान का खतरा पैदा हो जाएगा।
और मुझे इतने वजन का अभ्यस्त होने में थोड़ा समय लगेगा।
तो फिर इनके हथियारों का जवाब मैं खुद देती हूं, नागराज! पृथ्वी के इतनी अन्दर तो धातु के कण हर जगह मौजूद होंगे।
शक्ति के हाथ चट्टान पर कस गए, और उनसे निकली तीव्र ऊष्मा, धातु को हथियार का रूप देने लगी-

और दोनों तरफ से हथियारों का तेज आदान-प्रदान होने लगा–
मेरे हथियार ज्यादा असरकारक सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं नागराज ! क्योंकि ये नाग चट्टानों के पीछे छिपकर हमला कर रहे हैं।
हथियार चट्टानों से टकराकर बेकार हो रहे हैं।...
...और यहां पर की धातु भी तेजी से खत्म होतीजा रही है।
ये नाग आगे बढ़कर हमें घेरने की कोशिश में हैं। अगर ये ज्यादा पास आ गए तो संख्या अधिक होने के कारण इस संकरी सुरंग में ये हम पर काबू भी पा सकते हैं।
इनको पीछे ढकेलना होगा। अगर यहां पर मेरा वजन बढ़ गया है तो मेरी शक्ति भी कुछ न कुछ तो बढ़ी ही होगी। और अब मैं उसी ताकत के सहारे इनको पीछे खदेड़ दूंगा।
नागराज की दोनों कलाइयों से सर्प निकलकर...
...एक दिलचस्प आकार में जुड़ने लगे–
यह क्या नागराज ? देखने में तो यह 'गुलेल' जैसी चीज लग रही है।
तुमको एकदम ठीक लग रहा है शक्ति !...
... लेकिन इस 'सर्पगुलेल' में कंकड़ नहीं, चट्टानें भरी जाएंगी, जिनको अब मैं आराम से उठा सकता हूं।...

–और इन चट्टानों के वार से इन सर्पों को पीछे हटना ही पड़ेगा।...
...वर्ना ये जान से हाथ धोएंगे!
सर्पगुलेल से चट्टानें एक के बाद एक छूटकर, मिसाइलों की तरह सर्पों के छिपने के ठिकाने पर गिरने लगीं–
और इस हमले ने सर्पों के छक्के छुड़ा दिए–
उनके पास पीछे भागने के अलावा, और कोई चारा नहीं बचा था–
सारे के सारे सर्प सुरंग में पीछे की तरफ भागे और उस सुरंग का अन्त होता था...
...महानाग तक्षक के विशेष दरबार में–
महाराज तक्षक! हमें बचाइए! वे दोनों मानव तो अद्भुत शक्ति वाले हैं!
मैं जानता हूं। सब देख चुका हूं मैं।
और मैं यह भी देख रहा हूं कि वे तुम्हारे ठीक पीछे...

...आ रहे हैं!
आओ, नागराज, आओ! तक्षक की बधाई भी स्वीकार करो, और शोक संवेदनाएं भी।
ओह! तो तुम हो तक्षक! पृथ्वी पर आए विनाश के कर्ताधर्ता।...
...लेकिन ये बधाई और शोक संवेदना एक साथ क्यों?
बधाई इसलिए क्योंकि आज तक कोई भी मानव जहां तक पहुंचने में सफल नहीं हो पाया, वहां तक तुम लोग पहुंच गए हो।
और शोक संवेदनाएं इसलिए क्योंकि अब आ ही गए हो तो जिन्दा वापस नहीं जा पाओगे।
हम यहां पर मौत की नहीं, शान्ति की बात करने आए हैं। हम तुमसे सतह पर आई तबाही का कारण जानने और उसे रोकने की प्रार्थना करने आए हैं।
हम कीड़ों से बात नहीं करते। उनको अपनी पादुकाओं के नीचे मसल देते हैं।
ठहरो! इसकी बात तो सुन लो। फिर जो चाहे निर्णय करना।
सॉय
सुनने को है ही क्या? ये हमसे जान बचाने की भीख मांगेगी, और क्या?

नागराज कभी जान की भीख नहीं मांगता तक्षक! नागराज के प्रतिद्वंद्वी उससे प्राणों की भीख मांगते हैं!
ओह! तू मुझ पर इन सपोलों से हमला कर रहा है। पर ये तो मेरे शरीर के पसीने की गंध से ही मर जाएंगे।
देखा? मर गए! इतना जहरीला है तक्षक! मेरी एक फुंकार से हरा-भरा पेड़ भी ठूंठ में बदल जाता है।
...चल देख लेते हैं कि किसका जहर तीक्ष्ण है।
नागराज की तीव्र विष फुंकार, तक्षक की तरफ लपकी-
और तक्षक लड़खड़ाकर नीचे आ गिरा-
ओह! सचमुच तेज जहर है तुममें! इतना तेज जहर तो सिर्फ देव कालजयी के पास है, जो उसको शंकर भगवान के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ था। जरूर तुममें कालजयी का जहर है।
पहली बार मुझे टक्कर देने वाला प्राणी मिला है।
अब आनन्द आएगा इस युद्ध में।
बड़ा गुमान है तुम्हें अपने जहर पर?...
नहीं!
इन फुंकारों के टकराव से यहां खड़े हर प्राणी की जान को खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

तक्षक के दयालु रूप का सोचना सही था। दोनों की विष फुंकारों के टकराव से विष की भीषण लहरें वातावरण में फैल गईं-
तक्षक के नागों के साथ-साथ शक्ति भी अपने होश खोकर भूमि पर आ गिरी-
इसका जहर मेरे जहर से थोड़ा सा अधिक तीव्र है। इसको मैं अकेला झेल नहीं पाऊंगा।
मुझे अपने शरीर में बसने वाले असंख्य नागों की मदद लेनी होगी।
तक्षक की फुंकार, नागराज के जहर को काटती हुई जब तक नागराज तक पहुंची, तब तक नागराज के शरीर पर असंख्य नाग उभर आए थे-
तक्षक की फुंकार को पी जाने के लिए-
ओह! तेरे शरीर ने मेरे विष का ताप सोख लिया है, इसीलिए तेरे नाग बच गए...
...और फुंकार इतने अधिक नागों में बंट जाने के कारण घातक भी नहीं रह गई। अब फुंकार छोड़नी बेकार है।...

...अब तुझ पर अपनी दूसरी शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा। वैसे तो अगर मेरे अधिकतर नाग, पृथ्वी की भरने न गए होते, तो मुझे उंगली हिलाने तक की जरूरत न पड़ती...
...लेकिन क्या करें! तेरी किस्मत में मेरे हाथों ही मौत लिखी थी।
और नागराज का शरीर बहुत तेजी से एक बांबी में ढकने लगा–
ओह! यह क्या? मेरा शरीर भी बांबी में ढकता जा रहा है, और मैं इसकी तोड़ नहीं पा रहा हूं।
अभी कल ही शक्ति ने भी मुझे धातु के एक ऐसे ही खोल में ढक दिया था। जैसे मैं सर्पसुरंग बनाकर उससे निकल आया था।...
...वैसे ही इससे भी बाहर... अरे! यह बांबी तो मेरे पैरों के नीचे भी है। न ही मेरे सर्प इससे बाहर निकल सकते हैं और न ही मैं इच्छाधारी सर्प बनकर।
तक्षक के हाथों से निकलकर, मिट्टी की एक लहर सी नागराज की तरफ लपकी–
अब अपनी मौत के लिए तैयार हो जा नागराज!
लावे कुंड की गर्मी पहले तो इस बांबी खोल को चटकाकर तोड़ डालेगी, और फिर तेरे शरीर को मोम की तरह गला और जला डालेगी।
यह तुमने क्या किया?
इस पूरे प्रकरण में हमने अब तक किसी मानव की जान नहीं ली है

★ इच्छाधारी शक्ति के प्रयोग में नागराज का शरीर पहले कणों में बदलता है और फिर वे कण नाग-रूप या नागराज के मानव रूप में जुड़ जाते हैं। विस्तार में जानने के लिए पढ़े–'इच्छाधारी'

ऊपर पहुंचते ही नागराज ने फिर से अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया–
ओफ्! बाल-बाल बचा! अगर तीन पलों तक मेरे शरीर-कण यहां तक न पहुंचते तो दुबारा इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग तुरन्त कर पाना असंभव था।
तक्षक को मेरे बच पाने का जरा सा भी आभास नहीं है।
इस वक्त उस पर काबू पाना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा।
नागराज ने हमला तो सही वक्त पर किया था–
तड़ाक
लेकिन उसकी उम्मीद के विपरीत, तक्षक उसका वार बड़े आराम से झेल गया–
ओह! तू बच गया? आश्चर्य! अद्भुत नागमानव है तू। लेकिन तक्षक भी कोई साधारण नाग नहीं है। एक तो तक्षक में वैसे ही पृथ्वी के गर्भ में रहने के कारण अधिक शक्ति है...

और दूसरे तक्षक एक नहीं, दो सर्पों से मिलकर बना है। हमारे शरीर आपस में तंत्र बंधन से जुड़े हुए हैं।
इसीलिए हमारे हर वार में दुगुनी, और तुम्हारे हिसाब से दस गुनी ताकत भरी होती है।
कड़ाक
तक्षक गलत नहीं कह रहा था। और नागराज को जल्दी ही इस बात का अहसास हो गया कि वह न तो तक्षक से जहरीली शक्तियों में जीत सकता है—
तड़ाक
और न ही शारीरिक शक्ति में—
ऐसे खामख्वाह लड़ने का कोई फायदा नहीं है। आखिरकार हार तो मेरी ही होनी है।...
तड़ाक
...इसको हराने के लिए कोई योजना बनानी बहुत जरूरी है। और ऐसी एक योजना मेरे दिमाग में आ रही है।

राज कॉमिक्स
तक्षक के क्रुद्ध रूप ने अभी अपने बड़बोलेपन में यह बक दिया है कि ये दो शरीरों को, तंत्र बंधनों से मिलाकर बना है।
अगर मैं इसके दोनों शरीरों को अलग कर सकूं तो इसकी शक्ति भी आधी रह जाएगी, और शायद मुझे इसके दयालु रूप से मदद भी मिल सकेगी।
अगर तू समझता है कि नागरस्सी के सहारे उड़कर तू तक्षक से बच सकता है तो ये तेरी भूल है नागराज!
मैं बचने की नहीं, हमले की तैयारी कर रहा हूं तक्षक महाराज! तुमको जमीन पर गिराना है, और यह तभी संभव हो सकता है, जब मैं अपने शरीर को गति देकर तुम्हारे शरीर से टकराऊं।
घटाक
ऐसे!
तक्षक ने उठने की कोशिश की। लेकिन नागराज के अगले सटीक वार ने उसको फिर से जमीन सुंघा दी-
तक्षक बार-बार उठता रहा और नागराज उसको बार-बार लिटाता रहा-

लगातार इतने भीषण वार, तक्षक जैसा शक्तिशाली प्राणी भी नहीं सह सकता था-
वह कुछ पलों के लिए बेसुध हुआ, और नागराज ने लपककर उसके एक पैर को अपने हाथों से जकड़ लिया-
अब मुकाबला इसके तंत्र बंधन और मेरी शारीरिक शक्ति के बीच में है। अब तक मेरी मांसपेशियां भी मेरे बढ़े वजन की आदी होकर और शक्तिशाली हो गई हैं।... पृथ्वी के बच सकने का यही एकमात्र रास्ता बचा है...
... कि मैं तक्षक पर विजय प्राप्त करके इसकी पृथ्वी पर विनाश रोकने और इमारतों को उनकी अपनी जगह पर फिर पहुंचाने के लिए मजबूर कर दूं। और यह काम सिर्फ इसके दोनों शरीरों को अलग-अलग करके ही किया जा सकता है!
नागराज ने अपने शरीर की शक्ति का एक-एक कतरा तंत्र बंधन को तोड़ने में लगा दिया-
और आखिरकार उसकी मेहनत सफल हो गई-
तंत्र शक्ति का बंधन नागराज की शारीरिक और इच्छा-शक्ति के अचूक संयोग के आगे हार गया था-
शक्ति भी अब तक होश में आ चुकी थी-
बस नागराज! अब मैं इस दुष्ट के दोनों भागों को अपने तीसरे नेत्र की अग्नि से जलाकर राख कर दूंगी।
ठहरो! हमको कमजोर या कायर न समझो। हम अब भी तुम लोगों का मुकाबला आराम से कर सकते हैं।...
... पर पहले मैं तुमको इस विनाश का कारण बताना चाहता हूं। ताकि तुम लोग स्थिति को भलीभांति समझ सको!

मानवों के पृथ्वी पर आने से भी बहुत पहले हम इसी पाताल लोक में रहते हैं। मानवों की प्रगति और उनके कार्यों पर हमेशा हमारी नजर रही। शुरू में तो हमको मानवों से कोई समस्या नहीं थी...

... लेकिन फिर जब से मानव ने धातु को खोज लिया, तबसे हमारी समस्या बढ़ने लगी। उसने बड़ी-बड़ी मशीनें और इमारतें बनाने के लिए पृथ्वी के सीने में खानों को खोदना शुरू कर दिया। पृथ्वी का सीना धीरे-धीरे खाली होने लगा, और मुसीबत हम पर आने लगी।

हमारा पाताल लोक टूटने लगा। भूस्खलन आम हादसा बन गया। हमारे नाग इस हादसे में मरने लगे। लेकिन मानव ने पृथ्वी को खोदना बंद नहीं किया। तब हमारे पास इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा कि जिन मशीनों और इमारतों को बचाने के लिए पृथ्वी को खोखला किया गया है, हम उन्हीं से पृथ्वी को फिर से भर दें। और यही काम हम कर रहे हैं। अब बताओ इसमें हमारी गलती है या मानवों की?

... उधेड़ दूं, तो पूरी गेंद टूट-फूट जायेगी।

पृथ्वी भी कुछ ऐसी ही है। धातु की खानों ने पृथ्वी को इस सिलाई की तरह जकड़ रखा है। अगर इस खान रूपी सिलाई को खोद दिया... यानी उधेड़ दिया गया, तो पृथ्वी भी इसी गेंद की तरह टूट जायेगी।

... मुझे यहां के सबसे विशाल धातु भंडार तक ले चलो। मैं तुम्हारे और मानवों के बीच का झगड़ा मिटा सकती हूं।

ओह, समझा! लेकिन इस समस्या का हल क्या है? बिना धातु के तो मानवों का अस्तित्व ही संभव नहीं है।

मैं शायद कुछ मदद कर सकूं...

ऐसा ही जाए तो फिर हमको और क्या चाहिए? मानवों से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है।

आओ, मेरे पीछे-पीछे आ जाओ।

जल्दी ही तक्षक दोनों को एक विशाल धातु भंडार तक ले आया-

ये देखो! यह यहां का सबसे विशाल धातु भंडार है। इस भंडार में हर किस्म की धातु मौजूद है।

बस! मुझे भी ऐसे ही धातु-भंडार की आवश्यकता थी।

अब मैं अपनी असीमित ऊर्जा से इस धातु को पिघलाकर इसको एक ऐसे मोटे लोहे के सरिये का रूप दे दूंगी...

... जो पूरी पृथ्वी को चारों तरफ से उसी धागे की तरह कस देगा, जो क्रिकेट की गेंद को बांधे हुए था।

शक्ति के हाथों से असीमित ऊर्जा निकलती रही। और धातु का मोटा सरिया पृथ्वी के सीने को काटता हुआ पूरी पृथ्वी को अपने आगोश में कसने लगा-

और फिर-

बस! तुम्हारी समस्या दूर हो गई महानाग तक्षक! अब मानव जैसा करेंगे, खुद भरेंगे। पाताल लोक को अब मानवों के कार्य-कलापों के कारण खतरा कभी नहीं होगा!

मुझे भी तुम्हारे तंत्र बंधनों की तोड़कर तुम्हारे शरीरों को अलग-अलग करने के लिए खेद है तक्षक!
मामूली बात है नागराज! हमें तंत्र बंधनों द्वारा जुड़ने में एक पल से ज्यादा का समय नहीं लगेगा।
और मैं पृथ्वी की सतह से नीचे लाई गई हर वस्तु को फिर से उसकी जगह पर पहुंचा दूंगा।
इसको भी अब चलना चाहिए। मेरा हाथ पकड़ लो नागराज!
शक्ति का शरीर फिर से ऊर्जा रूप में बदलने लगा—
और तक्षक की विस्फरित आंखों के आगे, शक्ति और नागराज फिर से सतह की तरफ बढ़ चले—
सतह पर भी सब कुछ फिर से सामान्य होने लगा। चीजें यथास्थान पहुंचने लगीं—
अरे! पीसा की मीनार फिर से पृथ्वी से बाहर निकल आई!
पर ये गई कहां थी?
ओह! संचार भवन कहां से आ गया?
सब की मुश्किलें दूर हो चुकी थीं। सिवाय चन्दा की मुश्किल के—
फिर मिलेंगे शक्ति!
अवश्य मिलेंगे नागराज!
लेकिन अब चन्दा ममता की इतनी देर गायब रहने का क्या कारण बताएगी!
समाप्त